अध्याय- प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.1.1 पर्यावरणीय शिक्षा

1.1.2 पर्यावरणीय शिक्षा के उद्देश्य

1.1.3 भारत वर्ष में पर्यावरण क्षेत्र

1.1.4 विश्व स्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता

1.2 समस्या कथन

1.3 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

1.4 शोध कार्य के उद्देश्य

1.5 अध्ययन का परिसीमन

1.6 शोध प्रश्न

1.7 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

अध्याय–1

1.1 प्रस्तावना –

"क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम शरीरा।।[1]

पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु तथा आकाश वे मूलभूत तत्व है जिनके बिना मनुष्य का अस्तित्व संभव नहीं है। प्रत्येक प्राणी एवं मानव पर्यावरण का ही एक अंश है। इसके अतिरिक्त वन–वनस्पति, पेड़–पौधें भी मानव अस्तित्व के लिए विशेष सहायक होते है। इन सबके परस्पर योगदान से ही पर्यावरण का सृजन होता है। पर्यावरण में समूची भौतिक एवं जैविक व्यवस्थाएं सम्मिलित है जिसमें जीवधारी रहते है, बढ़ते है, पनपते है एवं विकसित होते है। पर्यावरण एवं मानव का संबंध आदिकाल से है। मानव ने इस पर्यावरण को सदैव प्रदूषित किया है। वायुमण्डल, जलमण्डल, एवं स्थलमण्डल सभी प्रदूषित हो रहे है।

जलमण्डल एवं स्थलमण्डल को प्रदूषित करने में बढ़ती हुई जनसंख्या एवं औद्योगीकरण ये दोनों तत्व अति महत्वपूर्ण है। जनसंख्या वृद्धि की मांग की पूर्ति हेतु औद्योगिकीकरण आवश्यक हैं नये उद्योगों की स्थापना एवं संचालन से अवशिष्ट रासायनिक पदार्थ एवं अपशिष्ट नदियों में प्रवाहित कर जल को दूषित करते है।

वायुमण्डल को प्रदूषित करने में 46% भाग केवल परिवहन साधनों का है। वातावरण में ग्रीन हाऊस गैसों के प्रचुर मात्रा में प्रयोग होने के कारण ओजोन परत में छिद्र हो गया है जिसके कारण सूर्य की पराबैंगनी विकिरणें सीधे पृथ्वी पर पड़ रही है, जिससे वातावरण का तापमान बढ़ रहा है जो मानव जाति हेतु विकट संकट है।

---

[1] रामचरित मानस, तुलसीदास, 448 किष्किंधा काण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर।

आर्थिक विकास एवं औद्योगिकीकरण से पर्यावरण में सार्वत्रिक ऊष्णता (Global Warming) एक विकट समस्या है। सार्वत्रिक ऊष्णता से आशय है भूमण्डल का गरम होना। कार्बन डाई आक्साइड (CO_2) मीथेन (CH_4), क्लोरो फ्लोरो कार्बन (CFC), नाईट्रस ऑक्साइड (N_2O), जीवाश्म ईधन, सल्फर हैक्सा फ्लोराईड (SF_6) पर फ्लोरो कार्बन (PFC_5) आदि गैसों की लगातार बढ़ रही सांद्रता के कारण इस वसुन्धरा का तापमान बढ़ रहा है। इसके कारण संपूर्ण विश्व पर जो पर्यावरणीय प्रभाव पड़ रहा है उसे ग्लोबल वार्मिग कहते है।

''हैडले सेंटर फार क्लाइमेट चेंज'' के वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में अनुमान औसत तापमान 6 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जायेगा। जिसके कारण तटीय द्वीप जैसे मॉरीशस, मेडागास्कर, अण्डमान निकोबार, लक्ष्यद्वीप आदि पूरी तरह से डूब जाऐगे। हिमनदों की बर्फ पिघलकर समुद्र का जल स्तर 21 सेंटीमीटर बढ़ा देगें। बर्कले स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया की रिपोर्ट (2006) के अनुसार ग्रीनलैण्ड का हिमनद जल्दी ही पिघलने के कगार पर जा चुका है। हिमालय ने तो पिघलना भी शुरू कर दिया है।

हाल ही (2010) में बांग्लादेश एवं भारत के समीप 'न्यूमूर द्वीप' जिस पर दोनों देश अपनी संप्रभुता का दावा करते है तथा इस द्वीप पर भारत का ही नियंत्रण है का अस्तित्व ही समाप्त हो गया हैं इसका कारण ग्लोबल वार्मिग ही है।

सार्वत्रिक ऊष्णता की प्रक्रिया को रोकने के लिए सर्वप्रथम प्रयास संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (U.N.E.P.) के द्वारा 1985 में वियना सम्मेलन, 1987 में मांट्रियल प्रोटोकाल, 1990 लंदन सम्मेलन, 1992 कोपेन हेगन सम्मेलन आयोजित किये जा चुके है। 1997 का क्योटो सम्मेलन जिस पर 84 देश हस्ताक्षर कर चुके है फरवरी 2006 से लागू हुआ है। इस संधि के तहत वर्ष 2008 से 2012 तक की अवधि में तीन प्रमुख ग्रीन हाऊस गैसों (CO_2), (CH_4) तथा (N_2O) के उत्सर्जन में कमी लाना है।

मनुष्य संपदा, जल समूह एवं वायुमण्डल के समन्वित आवरण का नाम है। पर्यावरण व सुरक्षा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। दोनों की ही वजह से एक दूसरे का महत्व प्रतिपादित हैं। पृथ्वी पर जो संतुलन रहा है उसे बनाये रखने का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व भी मानव समाज का ही है, पर हम यह भी जानते है कि पर्यावरणीय असंतुलन का निमित कोई नहीं स्वयं मानव समाज ही है। भारतीय दर्शन में मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं, सखा है।

यर्जुवेद में भी कहा गया है –

"मित्र स्थाहं चक्षुषा सर्वाणि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुणा समीक्षा महे।।"

आवश्यकता है, फिर से मनुष्य अपनी आंतरिक ऊर्जा व आंतरिक आत्म चेतना को पहचाने और भौतिकता के पीछे की दौड़ को छोड़ प्रकृति के साहचर्य को अपने विकास का अनिवार्य अंग बनाये। विज्ञान और धर्म के अधूरेपन को दूर करने का एक मात्र उपाय यही है, कि दोनों एक दूसरे के पूरक बने।

अतः पर्यावरण को संतुलित रखना हम सबका कर्तव्य है। प्रदूषित पर्यावरण को संतुलित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा का सामान्य जन तक पहुंचना आवश्यक एवं अनिवार्य है। पर्यावरण शिक्षा को प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुँचाकर उसे पर्यावरणीय साक्षर बनाना आवश्यक है क्योंकि व्यक्तित्व के विकास में वातावरण की प्रमुख भूमिका होती है। चारों ओर का वातावरण जिनके अंदर पशुओं, जीवों, पौधों तथा व्यक्तित्व के विकास, रहन–सहन तथा कार्य करने की प्रक्रिया सम्मिलित होती है, पर्यावरण शब्द द्वरा बताई जाती है यह पर्यावरण जिसमें सब कुछ सम्मिलित किया जाता है जो बालक के जीवनपर्यत कार्य प्रणाली तथा जीवन शैली को प्रभावित करता है।

प्रत्येक बालक का संपर्क पर्यावरण से प्रत्यक्ष रूप में होता है, इस कारण से वर्तमान समय में पर्यावरण का विद्यार्थी पर एवं विद्यार्थी का पर्यावरण पर प्रभाव भी प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। आज जबकि संपूर्ण विश्व में

पर्यावरण गंभीरता सर्वोच्च समस्या होकर भी खोती जा रही है, तब वर्तमान समय में इस बात पर शोध करना आवश्यक हो गया है कि वे कौन से कारण है जिससे विश्व को इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है, केवल अधिनियम या संरक्षण के नियम बनाकर पर्यावरण संबंधी समस्याओं को हल नहीं किया जा सकता। इसे हल करने हेतु हमें विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता एवं पर्यावरण के प्रति आचरण को जानना आवश्यक होगा कि उनका आचरण पर्यावरण के प्रति किस प्रकार है? यदि वर्तमान व्यवस्था व पाठ्यचर्या उनका आचरण परिवर्तित कर सके तो हम अपने समस्त वातावरण को प्रदूषित होने एवं नष्ट होने से बचा सकेगें।

1.1.1 पर्यावरणीय शिक्षा

बेलग्रेड घोषणा पत्र (1975) के अनुसार "पर्यावरण को उसके समग्र रूप में देखो – वह चाहे प्राकृतिक हो मानव जनित हो, पारिस्थितिक हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो, सामाजिक व वैधानिक हो, सांस्कृतिक हो या सौन्दर्य परक हो।"

वेबस्टर (Webster) शब्दकोष के अनुसार "पर्यावरण से तात्पर्य उस घेरे में रहने वाली परिस्थितियों, प्रभावों और शक्तियों से है जो सामाजिक और समुदाय के समूह द्वारा व्यक्ति और समुदाय के जीवन को प्रभावित करती हैं।" पर्यावरणविद फिटिंग का मानना है – "प्राणियों का पारिस्थितिकीय योग ही पर्यावरण है।" हर्सकोविट्स का मानना है – "पर्यावरण सम्पूर्ण बाह्य परिस्थितियों और उसका जीवनधारियों पर पर पड़ने वाला प्रभाव है जो जैव जगत के विकास चक्र का नियामक है।"

पर्यावरण शिक्षा वह ज्ञान प्रदायिनी शाखा है जो पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुचिंतापूर्ण बनाने का मंतव्य देती है। इसका लक्ष्य पर्यावरण के प्रति ज्ञान एवं जागरूकता का प्रार्दुभाव करना और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनसहभागिता बढ़ाना है।

1.1.2 पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

सन् 1977 में तिबलिसी (Tiblisi) में अंर्तप्रशासनिक क्रान्फ्रेंस (Inter governmental Conference) में जब 'पर्यावरण शिक्षा' का विधिवत् शुभारंभ हुआ तो यह निर्णय लिया गया कि विश्व के सभी देशों के लिए समान और व्यापक रूप से पर्यावरण शिक्षा के ऐसे वस्तुनिष्ठ उद्देश्य निश्चित किए जाने चाहिए जो अत्यंत व्यावहारिक और पर्यावरण से संबंधित समस्याओं का सामना कर सकते हो।

(1) **जागरूकता (Awareness) से संबंधित उद्देश्य**

व्यक्ति और समाज को संपूर्ण पर्यावरण और उससे संबंधित समस्याओं के प्रति संवदेनशीलता प्रदान करना।

(2) **ज्ञान (Knowledge) से संबंधित उद्देश्य**

व्यक्ति को संपूर्ण पर्यावरण और उससे संबंधित समस्याओं की आधारभूत समझ प्रदान करना, उसको दायित्व का भान कराना तथा उसको भूमिका निभाने में सहायता प्रदान करना।

(3) **अभिवृत्ति (Attitude) से संबंधित उद्देश्य**

पर्यावरण की गहरी चिंता करने, सामाजिक दायित्व निभाने, पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार करने के लिए प्रेरित करना।

(4) **कौशल (Skills) से संबंधित उद्देश्य**

पर्यावरण की समस्याओं को सुलझाने व हल खोजने के कौशल प्रदान करती है।

(5) **मूल्यांकन क्षमता (Evaluation Ability) से संबंधित उद्देश्य**

पर्यावरण की सुरक्षा के उपाय तथा शैक्षिक कार्यक्रमों की पारिस्थितिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सौन्दर्यपरक और शैक्षिक घटकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करने की क्षमता प्रदान करना।

(6) सहभागिता (Participation) से संबंधित उद्देश्य

पर्यावरण समस्याओं का उचित ढंग से हल निकालने के लिए जिम्मेदारी और सहभागिता की भावना को विकसित करना।

यूनेस्को की रिपोर्ट (1974) के अनुसार पर्यावरण शिक्षा पर्यावरणीय संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करने का मार्ग है न कि विज्ञान की कोई अलग शाखा या अध्ययन हेतु कोई विशिष्ट विषय। इसी के अन्य प्रकाशन 'लिवींग इन द इन्वायरमेन्ट – ए सोर्स बुक फॉर एनवायरमेन्ट एजुकेशन' में पर्यावरण शिक्षा के बारे में कहा गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF-2005) के अनुसार बच्चों को पर्यावरण व पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण सरोकार है। अब यह अधिक अनिवार्य हो गया है कि पर्यावरण का पोषण व संरक्षण किया जाए। इसलिए प्रांरभिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की शिक्षा दी जानी चाहिए। प्राकृतिक अध्ययन में उसके संरक्षण और क्षरण से बचाने की आवश्यकता पर जोर होना चाहिए।

1.1.3 भारत वर्ष में पर्यावरण शिक्षा

सन् 1985 में 'केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय' ने ' पर्यावरण शिक्षा' के लिए योजना का सूत्रपात किया, जिसकी रचना पर्यावरण और उसकी सुरक्षा के प्रति जनचेतना जागृत करने के लिए की गई। उसी समय से पर्यावरण और वन मंत्रालय विभिन्न पर्यावरण व वानिकी कार्यक्रमों तथा पर्यावरण शिक्षा के नियोजन, संवर्धन और क्रियान्वयन की निगरानी के लिए भारत सरकार के प्रशासनिक ढांचों में एक केन्द्रीय बिन्दु के रूप में कार्य कर रहा है। मंत्रालय को देश में 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम' (UNEP) तथा अंतर्राष्ट्रीय समन्वित पर्वत विकास केन्द्र (ICIMOD) की केन्द्रीय एजेन्सी के रूप में नामित किया गया है और यह संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण एंव पर्यावरण विकास सम्मेलन (UNCED) के अनुवर्ती कार्यक्रमों का ध्यान देता है।

भारत सरकार ने 9वीं पंचवर्षीय योजना में 'पर्यावरण शिक्षा' के लिए विशेष बजट का प्रावधान किया है। विद्यालयों में 'पर्यावरण उन्मुख योजना के लिए 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय' द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की जाती हैं। राज्यों को योजनाओं के कियान्वयन के लिए शत-प्रतिशत सहायता प्रदान करने का प्रावधान है। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय में शैक्षिक पाठ्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा को अलग से तथा एक अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करने के लिए औपचारिक शिक्षा में सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण पहल की है। मंत्रालय अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा को भी प्रोत्साहन देता है। जो कि समाज के सभी वर्गो में जागरूकता या चेतना उत्पन्न करने के लिए प्रयासरत है। यह गोष्ठियों, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, श्रव्य-दृश्य कार्यक्रमों आदि का भी आयोजन करता है।

मंत्रालय द्वारा पर्यावरण विज्ञान तथा प्रबंध के प्राथमिकता वाले क्षेत्र में जागरूकता, ज्ञान, अनुसंधान औन प्रशिक्षण सुविधाओं को मजबूत बनाने के 7 उत्कृष्ट केन्द्र खोले गये है। जिसमें पर्यावरण के क्षेत्र में पर्यावरण शिक्षा केन्द्र अहमदाबाद, सी.पी.आर. शिक्षा केन्द्र चैन्नई प्रमुख है।

भारत वर्ष में 'अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम' (IEEP) के सहयोग से नई दिल्ली में सन् 1983 में NCERT और IEEP की संयुक्त, कार्यगोष्ठी 'पर्यावरण शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण', सन् 1985 में संयुक्त पर्यावरण शिक्षा की परामर्शी बैठक, सन् 1987 में NCERT और IEEP का एशियाई क्षेत्र के लिए संयुक्त उपक्षेत्रीय सेमिनार, सन् 1989 में 'पर्यावरण शिक्षा के लिए अन्तक्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम' आयोजित होते रहे है।

पर्यावरण शिक्षा पर दिल्ली में द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स (1985) आयोजित हुआ, जिसमें इससे पहले आयोजित 'पर्यावरण तथा पर्यावरण शिक्षा' पर अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेसों के आधार पर प्रमुख विचार बिन्दुओं पर समेकित कर अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसे 'पर्यावरण शिक्षा पर दिल्ली घोषणा-पत्र' कहते है।

वर्ष 1993 में दिल्ली में 'ग्लोबल फोरम फॉर एनवायरमेण्टल एजूकेशन' का सेमिनार आयोजित हुआ, जिसमें यूनेस्को के 'पर्यावरण शिक्षा प्रभाग' के प्रमुख डॉ. अब्दुल गफूर गजनवी ने कहा कि आज आवश्यकता पर्यावरण शिक्षा की राष्ट्रीय योजना और व्यूह रचना के विकास की है। मनुष्य पर्यावरण का एक अभिन्न अंग है तथ पर्यावरण परिवर्तन का प्रमुख कारक भी। पर्यावरण और विकास एक ही सिक्के के दो पहलू है। पर्यावरण शिक्षा पर राजनैतिक निर्णय लेने की आवश्यकता है।

1.1.4 विश्व स्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता

सन् 1972 में स्टाकहोम (स्वीडन) में आयोजित 'संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन मानव पर्यावरण' में सम्पूर्ण विश्व का ध्यान निरंतर गति से नष्ट होते, पर्यावरण की ओर आकर्षित किया गया। इस सम्मेलन का प्रमुख केन्द्र बिन्दु ''प्राकृतिक संपदाओं के निरंतर विनाश और औद्योगिकीकरण से उत्पन्न प्रदूषण द्वारा मानव के जीवन स्तर तथा उत्तर जीविका को खतरा'' था। इस सम्मेलन में 'बहुमूल्य पर्यावरण' को सुरक्षित रखने के उपायों पर बल दिया गया तथा उपाय ढूंढने का भी प्रयास किया गया।

संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के फलस्वरूप ''संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम'' UNEP की स्थापना हुई। इसी क्रम में ''पर्यावरण और विकास'' पर विश्व आयोग 1983 को नियुक्त किया गया। इस आयोग को ब्रण्डलैंड रिपोर्ट भी कहते है। इस आयोग ने सुझाव दिया कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसे दीर्घकालीन विकास की नीति बनाई जाए जिसमें आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संबंधी प्रकरणों को समाकलित किया जाय।

ब्राजील के रिओडिजनिरो में सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन पर्यावरण और विकास पर आयोजित हुआ। जिसे 'अर्थ समिट' (Earth Summit, 92) कहते है। इस सम्मेलन में पृथ्वी के भविष्य पर गहरी चिंता व्यक्त की गई तथा इस अधिवेशन के फलस्वरूप एक वृहद् दीर्घकालीन विकास प्रांरभ करने का प्रस्ताव एजेण्डा 21 पारित हुआ। सन् 1995 में

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सम्मेलन ने 'ग्लोबल वार्मिंग' को नियंत्रित करने की दृष्टि से 'अमीर देशों को अपनी तकनीकी गरीब और विकासशील देशों' को प्रदान करने का आग्रह किया।

संयुक्त राष्ट्र ने अपने पर्यावरण से संबंधित प्रशिक्षण और पर्यावरण बोध संबंधी कार्यक्रमों का पुर्नमूल्याकंन प्रांरभ किया तथा विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों की शिक्षा में पर्यावरण और विकास कार्यक्रमों को समाकलित करने पर बल दिया।

विश्व स्तर पर 1977 आयोजित इन्टर गवर्नमेन्टल काफ्रेन्स में पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य निम्न प्रकार निर्धारित किए गए :-

(1) ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा पारिस्थितिक अर्न्तनिर्भरता का ज्ञान तथा तत्संबंधी जागरूकता का प्रसार करना।

(2) प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण तथा उसके विकास संबंधी ज्ञान, मूल्य, अभिवृत्ति, प्रतिबद्धता तथा कुशलता अर्जित करने के अवसर प्रदान करना।

(3) पर्यावरण के संदर्भ में अन्तवैयक्तिक, सामूहिक तथा सामजिक स्तर पर नवीन व्यावहारिक चेतना का सृजन करना।

1.2 समस्या कथन

''प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता एवं पर्यावरण के प्रति आचरण का अध्ययन।''

1.3 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

पर्यावरणीय साक्षरता का अर्थ पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय जागरूकता के मिश्रित आयाम से है। जिसमें पर्यावरणीय ज्ञान प्रथम सोपान तथा पर्यावरणीय जागरूकता अगला सोपान है।

पर्यावरणीय ज्ञान	–	व्यैक्तिक तथा सामाजिक समूह को संपूर्ण वातावरण तथा इससे संबंधित समस्याओं को मूलभूत ढंग से समझाने में सहायता करता है।
पर्यावरणीय जागरूकता	–	व्यैक्तिक तथा सामाजिक समूह को संपूर्ण पर्यावरण तथा इससे संबंधित समस्याओं के प्रति संवेदनात्मक अहसास जाग्रत करने में सहायक होता है।
पर्यावरणीय आचरण	–	व्यैक्तिक तथा सामाजिक समूह में पर्यावरण एवं संबंधित मुद्दों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास तथा इनके समाधान हेतु उचित क्रियाकलाप में सहायता करना है।

पर्यावरण साक्षरता के अंतर्गत लिए गए कारक

पर्यावरणीय ज्ञान	1.	अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे
	2.	राष्ट्रीय मुद्दे
	3.	सामान्य पारिस्थितिकी तंत्र
पर्यावरणीय जागरूकता	1.	पर्यावरण मुद्दे के प्रति संवेदना
	2.	प्रकृति से प्रेम
पर्यावरणीय आचरण	1.	प्रकृति के साथ अंर्तक्रिया
	2.	संवेदनात्मक क्रियाकलाप
	3.	कार्य करने की दृढ़ इच्छा शक्ति

1.4 शोध के उद्देश्य

- ❖ प्रांरभिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरण ज्ञान का अध्ययन करना।
- ❖ प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
- ❖ प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण ज्ञान एवं पर्यावरण जागरूकता के मध्य संबंध जानना।
- ❖ प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता स्तर का अध्ययन करना।
- ❖ प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यारणीय साक्षरता द्वारा उनके प्रभावित पर्यावरण के प्रति आचरण के संचालित होने का अध्ययन करना।

1.5 शोध का परिसीमन

(1) प्रस्तुत शोध प्रांरभिक स्तर के कक्षा 8 के विद्यार्थियों तक सीमित है।

(2) अध्ययन मध्यप्रदेश राज्य के टीकमगढ़ शहर के शासकीय विद्यालय तक सीमित है।

(3) पर्यावरणीय साक्षरता हेतु दो आयाम पर्यावरणीय ज्ञान तथा पर्यावरणीय जागरूकता को आधार बनाया गया है।

(4) अध्ययन कुल 40 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

1.6 शोध प्रश्न

(1) प्रांरभिक स्तर (कक्षा 8वीं) के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय ज्ञान का क्या स्तर है ?

(2) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति जागरूक है ?

(3) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय ज्ञान एवं पर्यावरणीय जागरूकता के मध्य सार्थक संबंध है ?

(4) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थी पर्यावरणीय साक्षरता स्तर के आधार पर समान है ?

(5) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण के प्रति आचरण उचित है ?

(6) क्या प्रांरभिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय साक्षरता से पर्यावरणीय आचरण संचालित होता है ?

1.7 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

पर्यावरण शिक्षा अथवा पर्यावरण अध्ययन एक नया अधिगम क्षेत्र है। यह विषय अपनी विकासावस्था में है। संभवतः इस कारण इसका अधिगम क्षेत्र अभी तक पूरी तरह से निश्चित नहीं हो पाया।

वस्तुतः पर्यावरण अध्ययन को तीन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है पर्यावरण के लिए अध्ययन, पर्यावरण के बारे में अध्ययन, पर्यावरण के माध्यम से अध्ययन। प्रथम अर्थ में इसका संबंध सामाजिक समस्याओं से दूसरे में अर्थ में इसका संबंध विषय वस्तु से तथा तीसरे अर्थ में पर्यावरण का संबंध इसे शिक्षण साधन के रूप में प्रयुक्त करने से है। ऐसी आशा की जाती है कि पर्यावरण अध्ययन से विद्यार्थी में ऐसे विचारों, मूल्यों, रूपों तथा कुशलताओं का विकास होगा जो अन्य परिवेशों को समझने में सहायक होगा।

पिछले चार दशकों में विज्ञान के ज्ञान में वृद्धि तथा असंख्य अविष्कारों के द्वारा वैश्वीकरण से विशाल विश्व छोटे स्वरूप में बदल गया है। तकनीकी के विकास से पर्यावरण प्रदूषण और पारिस्थितिकी के बारे में संसार के सभी समुदायों द्वारा गंभीर चिंता व्यक्त की जा रही है। 6 से 14 वर्ष

की उम्र के सभी बच्चों को शिक्षा देने के संवैधानिक निर्देश को मूर्त रूप देने के प्रयास से स्थानीय जनजीवन एवं पर्यावरण का वास्तविक महत्व उभर रहा है। शिक्षा को अपने व्यावहारिक जीवन से जोड़ने तथा उसे जीवन उपयोगी बनाने के प्रयत्नों ने भी अनिवार्य रूप से बच्चों के आस–पास पर्यावरण की ओर बरबस ध्यान आकृष्ट किया है। इन विभिन्न धाराओं में शिक्षा में पर्यावरण के महत्व को विवाद से परे बना दिया है। यही कारण है कि पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं शिक्षाविदों ने पर्यावरण अध्ययन को प्रांरभिक शिक्षा स्तर पर अभिन्न अंग के रूप में स्वीकृत किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने भी शिक्षा और पर्यावरण का महत्व माना है। पर्यावरण के प्रति बालक–बालिकाओं में जागरूकता एवं ज्ञान पैदा करने की बहुत जरूरत है। यह ज्ञान एवं जागरूकता मात्र विद्यार्थियों तक ही सीमित नहीं रहे वरन् समाज के सभी आयु वर्ग और क्षेत्रों में भी इसका विस्तार होना चाहिए।

प्रांरभिक स्तर पर विद्यार्थियों को विषयों का समन्वय करके पढ़ाना सुग्राही रहता है। प्रांरभिक स्तर पर पर्यावरण के बारे में समुचित ज्ञान प्राप्त होने पर वे पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते है। पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा उचित जीवन मूल्यों का विकास होता है। विद्यार्थी अपने क्रियाकलापों द्वारा अपने वातावरण के प्रति उचित आचरण का परिचय दे तभी पर्यावरणीय शिक्षा सार्थक है।

इस अध्ययन से पर्यावरणीय शिक्षा में पर्यावरण और विद्यार्थियों के पारस्परिक संबंधों विद्यार्थियों के क्रियाकलाप, पर्यावरण के बारे में जानकारी, कौशलों का विकास किस सीमा तक हुआ है इसे ज्ञात करने हेतु उक्त अध्ययन की आवश्यकता महसूस की जाती है।